HISTORY

B.A.(Hon's)PART-I

Paper-I (Ancient Indian History)

Unit-I (प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 11

✓✓प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत(भाग-6)

✓वैदिक (धार्मिक)स्रोत (जैन साहित्य....)

✓जैन साहित्य.

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्त्रोत की जानकारी हेतु जैन साहित्य भी बौद्ध साहित्य की ही तरह महत्वपूर्ण हैं। अब तक उपलब्ध जैन साहित्य प्राकृत एवं संस्कृत भाषा में मिलते हैं। **जैन साहित्य, जिसे आगम' कहा जाता है, से 12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्ण, 6 छंद सूत्र, नंदि सूत्र, अनुयोग द्वार एवं मूल सूत्रों की गणना सम्पन्न होती है**। इन आगम ग्रंथो की रचना सम्भवतः श्वेताम्बर सम्प्रदाय के आचार्यों द्वारा महावीर स्वामी की मृत्यु के बाद की गयी। इनकी कुल संख्या बारह है जो इस प्रकार हैं –**(1) आचारांग सूत्त, (2) सूय कडंग (3) थाणंग (4) समवायांग (5) भगवती सूत्र (6) न्याय धम्मकहाओ (7) उवासगदसाओ (8) अन्तगडदसाओ (9)अणुत्तरोववाइय दसाओ (10) पण्हावागरणिआई (11) विवागसुयं (12) आदि**

इन आगम ग्रंथों के आचरांगसूत्र जैन भिक्षुओं के विधि-निषेयो एवं आचार-विचारों का विवरण एवं महावीर स्वामी जीवन-शिक्षाओं आदि के विषय में जानकारी मिलती है

ठाणंग में विविध प्रवचन है।

भमवायंगसुत में भी बहुसंख्यक संख्याओं के आधार पर अनेक प्रकार के उपदेश है।

भगवतीमूत्र में महावीर के जीवन पर प्रकाश पड़ता है।

नायाधम्मकहासुत में महावीर की शिक्षाएँ संग्रहीत है।

उवासगदसाओसुत में उपासक-जीवनसंवंधी नियमों का संपह है।

अन्तगडसओसुत और अणूतरोववाइयदसओसुत में प्रख्यात भिक्षुओं की निर्वाण-प्राप्ति की व्याख्या है।

पण्हावागरणाइयमसुत में जैन-नियमों का उल्लेख है।

विवागसुयमसुत में कर्मफल का प्रदर्शन है।

अंतिम सुत दिदठिवाप लुप्त हो चुका है।

प्रत्येक अंग का एक उपांग है। अत: **12 अंगों के 12 उपांग भी जो इस प्रकार हैं** औपपातिक (2) रामप्रश्नीय (3) जीवाभिगम, (4) प्रसापणा (5) सूर्य प्रज्ञप्ति (6) जम्बू द्वीप प्रसप्ति (7) चन्द प्रसप्ति (8)निर्यावलिका (9) कल्पावंत सिका (10) पुष्पिका (11) पुष्पचूलिका (12) वृष्णिदशा आदि।

आगम ग्रंथों के अतिरिक्त दस प्रकीर्ण इस प्रकार हैं।- चतु:शरण (2) आतुर प्रत्याख्यान (3) भक्ति परिक्षा (4) संस्तार (5) तंदुल वैतालिक (6) चंद्रवैहयक (7) गणिविद्या (8) देवेन्द्रस्तव वीरस्तव (10) महाप्रत्याख्यान।

6 छेद सुत्र - (1) निशीथ (2) महानिशीथ (3) व्यवहार (4) आचार दशा (5) कल्प (6) पंचकल्प आदि।

एक नंदिसूत्र एवं एक अनुयोग द्वार जैन धर्म के अनुयायियों के स्वतंत्र ग्रंथ एवं विश्वकोष हैं।

आगे भी यह जारी है...........

!!!!!!!!!धन्यवाद!!!!!!!!!!